रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २२: लिहाज़-ए-इंसानियत (मानवता का सम्मान)

'लिहाज़-ए-इंसानियत', 'मानवता का सम्मान' गुरु नानक की 'खोरासान' में रूहानी विरासत। 'गंधार' में मेहरवान, मानवतावादी इंसानियत की सुगंध बिखेर रहे हैं।

आखण सुनणा पउण की बाणी इहु मन रता माइआ ॥
खसम की नदर दिलहि पसिंदे जिनी कर एक धिआइआ ॥
तीह कर रखे पंज कर साथी नाउ सैतान मत कट जाई ॥
नानक आखै राहि पै चलणा माल धन कित कू संजिआही ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

बिना सोचे-समझे वाणी को बोलने और सुनने से, मन माया में मगन रहता है।
इलाही की कृपा उसी पर होती है जो तहदिल से विवेक और वहदत में मग्न रहता है।
तीस दिनों के उपवास और एक दिन में पांच नमाज़ें पढ़ने के बाद यदि शैतान बुद्धि बेकाबू है तो सारे प्रयास व्यर्थ हैं।
नानक ने कहा कि सत्य के मार्ग पर चलो। माया और जायदाद जोड़ने पर ही क्यों टिके हो?
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि यदि कोई पदार्थ की लालसा में डूबा रहता है तो वहदत से जुड़ने के लिये बोली और सुनी गई बाणी, हवा के झोंके की तरह चलायमान है।

यदि आंतरिक 'शैतान' ही काबू से बाहर हैं तो मन को काबू करने के लिये संयम के अमल व्यर्थ हैं।

पुरानी 'जन्मसखियों' में गुरु नानक और भाई मरदाना के ईरान से अफ़ग़ानिस्तान जाने वाले किसी विशेष रास्ते का ज़िक्र नहीं है। डॉ. कृपाल सिंह ने अपनी पुस्तक 'जन्मसाखी परंपरा' में सुझाव दिया है कि मशद से गुरु नानक और भाई मरदाना ने उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान से बल्ख और मज़ार-ए-शरीफ़ होते हुये काबुल का सफ़र किया। 'भाई मणि सिंह' जन्मसाखी में ज़िक्र आता है कि उन्होंने मशद से दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान के

कंधार से सफ़र किया। दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान में गुरु नानक से जुड़े वृतांत हैं जो बल्ख और मज़ार-ए-शरीफ के इलाके में नहीं हैं। इसलिये हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर कंधार द्वारा जा रहे हैं।

मशद से गुरु नानक और भाई मरदाना ने कंधार, ग़ज़नी, काबुल और जलालाबाद के रास्ते सफ़र किया। इसके आगे उन्होंने कुर्रम इलाके में सफ़र करते हुये कुर्रम दर्रे को पार किया और पाराचिनार पहुंचे। उन्होंने अपना सफ़र इब्राहिमज़ई, पेशावर, ऐमनाबाद के रास्ते जारी रखा और तलवंडी पहुंचे जिस को अब ननकाना साहिब कहा जाता है। मशद से वह सबसे पहले कंधार पहुंचे।

हम ईरान से अफ़ग़ानिस्तान जा रहे हैं और कंधार से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र जारी रखेंगे।

ओ इलाही संगी, मेरा दोस्त हिंदू है, और मैं मुसलमान हूं।
ओ इलाही संगी, उसकी दोस्ती की मुहब्बत में मैं
'धर्मशाला' का झाड़ूबरदार हूं जहां वह इबादत करता है।
ओ इलाही, मेरे मेहरवान संगी।

कंधार अफ़ग़ानिस्तान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, जो अरगंदाब नदी के किनारे समुद्र तल से तेतीस सौ फुट की ऊंचाई पर बसा हुआ है।

अमरदीप सिंह: कंधार का नाम 'गंधार' से बना है। यह सौदागरी के पक्ष से बहुत अनुकूल जगह पर है, यह मध्य-पूर्व और मध्य एशिया को उपमहाद्वीप से जोड़ने वाले सौदागरी मार्गों पर पड़ता है।

'गंधार' संस्कृत का शब्द है जिसका मायना महक वाली धरती है, शायद इसका हवाला इस इलाके की आबादी है जो विविध तहज़ीब का गुलदस्ता है। कंधार की बुनियाद यूनानी बादशाह सिकंदर ने रखी थी। बाद में यहां गंगा के मैदानी इलाकों के मौर्य सल्तनत के राजाओं का राज रहा और उसके बाद बौद्धी बादशाह अशोक आया। मध्य एशिया और मध्य-पूर्व के राजाओं ने इस इलाके की जान-पहचान इस्लामी तहज़ीब से करवाई।

कंधार में हम सूफ़ी फ़कीर बाबा वली कंधारी के मज़ार पर जा रहे हैं जिनके गुरु नानक से सबंध का ज़िक्र गुरुद्वारा पंजा साहिब की साखी में आता है जो पाकिस्तान के हसन अब्दाल में है।

'भाई मणि सिंह जन्मसाखी' में ज़िक्र आता है कि गुरु नानक और भाई मरदाना की मेहमानदारी बाबा वली कंधारी ने की थी। 'जन्मसाखी' कला में इस मुलाकात की पेशकारी की गई है जिस में शाह शरफ़ के साथ गुरु नानक और बाबा वली कंधारी बैठे हैं। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है लेकिन यह मुमकिन है कि इस तस्वीर में शाह शरफ वास्तव में शेख तातिहार हैं जो बू अली कलंदर शाह शरफ़ की मज़ार के रूहानी रहबर थे और गुरु नानक ने अपनी पहली उदासी के दौरान पानीपत में उनसे गोष्ठी की थी।

मुंह-ज़बानी चलती आई कथा के अनूसार कहा जाता है कि जब गुरु नानक यहां आये तो कंधार का हुक्मरान नाइंसाफ़ी और अहंकार वाला इंतजामिया था। वह पांच बार नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद जाता था। नावाजिब ओर अनुचित व्यवहार का मुआवज़ा लाज़मी मज़हबी दस्तूर निभा कर नहीं दिया जा सकता। इसलिये गुरु नानक ने गहरा संदेश देने के लिये सबद गाया।

सउ मण हसती घिउ गुड़ खावै पंज सै दाणा खाइ ॥
डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥
अंधी फूक मुई देवानी ॥
खसम मिटी फिर भानी ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

एक हाथी सौ मण घी और गुड़ खाता है और पांच मण अनाज खाता है।
वह खाकर डकार मारता है और धूल उड़ाता है।बाद में यह कीमती सांसों की पूंजी बर्बाद करने के कारण पछताता है।
अपने ही फरेब में अंधा हुआ मूर्ख मनुष्य ख़त्म हो जाता है।
जब वह आत्म पड़ताल में तल्लीन होता है तब उसका व्यक्तित्व प्रसन्न होता है।
(राग मलार, गुरु नानक)

हाथी का ध्यान बड़ी मात्रा में खाने, जुगाली करने और धूल उड़ाने में लगा रहता है और वह समय बर्बाद करता है। गुरु नानक ने उदाहरण दिया कि इसी प्रकार अहंकार से भरा हुआ मन कीमती समय को जुगाली करने में बर्बाद करता है और स्वयं से फरेब करता है। उन्होंने फ़रमाया कि दिलकश शख्शियत हासिल करने के लिये अहंकार को जड़ से उखाड़ना पड़ता है।

अफ़ग़ानिस्तान में दशकों की सियासी उथल-पुथल ने सामाजिक-मज़हबी विविधता को प्रभावित किया है। नानकपंथी बिरादरी अफ़ग़ान तहज़ीब का अभिन्न अंग थी, जिसमें हिंदुओं और सिखों की मिश्रित नानक नामलेवा संगत थी। यह बिरादरी उन्नीस सौ नब्बे के दशक के शुरू से दूसरी जगहों पर पनाह लेने के लिये मजबूर हुई है।

हम डॉ. रघुनाथ के घर जा रहे हैं जो गुरु नानक के पक्के पैरोकार हैं। तमाम मुश्किलों के बावजूद उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान नहीं छोड़ने का फ़ैसला किया है और वह कंधार में रहने वाले आख़िरी 'नानकपंथी' हैं।

डॉ. रघुनाथ: कंधार शहर की संगत में कई पढ़े-लिखे लोग थे। इस शहर में मैं अकेला डाक्टर बचा हूं। बात चल रही है, हमारे कलगीधर बाबे नानक की। बलिहार उनके, बलिहार उनके विचारों के। हमारी किस्मत, हमारे बुज़ुर्गों की, कंधार शहर की, जब उनके कदम यहां पड़े। हमारे बुज़ुर्गों ने उनके चरणों में, उनका मत धारण किया। कुछ मुसलमान भी उनके संपर्क में आ गये थे। कहते हैं वह बाबा वली की जगह भी गये थे। यह बाबा का मत है,

करणी परवान, क्या हिंदू, क्या मुसलमान ॥

सबसे महत्वपूर्ण अमल है। यह बेमतलब है कि तुम हिन्दू हो या मुसलमान?

इस वतन के सियासी हालात से स्थानीय लोगों पर पड़े कष्ट देख कर मुझे को गुरु नानक का शबद याद आया है।

संसार रोगी नाम दारू मैल लागै सच बिना ॥
(राग धनसारी, गुरु नानक)

मन को नकारात्मक विचारों का रोग लगा है। आत्म पड़ताल ही इलाज है। इस सत्य के बिना मन का लगाव मलिनता से जुड़ा रहता है।
(राग धनसारी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि दुनिया नकारात्मक सोच की बिमारी से पीड़ित है। जैसे लोहा लोहे को काटता है, वैसे ही आत्म पड़ताल, आत्म-उपचार की दवा बन जाता है।

डॉ. रघुनाथ हमें गुरु नानक की याद में बने स्थान पर ले गये, जिसकी देखभाल वह अकेले करते हैं क्योंकि 'नानकपंथी' बिरादरी इस मुल्क से पलायन कर गई है।

अमरदीप सिंह: यह 'धर्मशाल' कंधार में सबसे पहले बनी थी। इसके बाद पांच गुरुद्वारे कंधार में बने थे परन्तु इस समय सिर्फ़ एक ही खुलता है।

डॉ. रघुनाथ: इस गुरुद्वारे में जब पाठ रखते थे तो आठ दिनों के लिये संगत यहीं रहती थी, गुरुद्वारे से बाहर नहीं निकलती थी। यहां पाठ होता था। वह तवारीख है, समय के साथ सब गुज़र गया। मुल्क गर्क हो गया। लोग चले गये, लोग भी बिछुड़ गये। दरवाज़ा आज बंद है।

जब गुरु नानक कंधार आये थे तो अब के हालात की तरह तब भी उथल-पुथल का दौर था क्योंकि मुगल बादशाह बाबर के हमले हो रहे थे। कहा जाता है कि गुरु नानक ने लोगों के हालात देखकर गाया,

राज माल रूप जात जोबन पंजे ठग ॥
एनी ठगीं जग ठगिआ किनै न रखी लज ॥
एना ठगन ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥
नानक करमा बाहरे होर केते मुठे जाहि ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

राज्य, धन, रूप, जाति और जोबन पांच ठग है।
इन ठगों ने दुनिया को ठगा है। इन्होंने किसी का लिहाज नहीं रखा।
यह ठग उनसे ठगे गये हैं जिन्होंने कायनाती विवेक के सामने समर्पण कर दिया है।
नानक ने कहा कि वह मनुष्य जिनके इरादे नेक नहीं हैं वे इन्हीं के हाथों से ठगे जाते हैं।
(राग मलार, गुरु नानक)

गुर नानक ने फ़रमाया कि मानवीय खोट, राज्य, माल, रूप और सामाजिक रुतबे की लालसा ने कुदरत की सृजना को ठगा है।

यह मौजूदा दौर की सच्चाई है कि सदियों पुरानी "महान खेल" अफ़ग़ानिस्तान की धरती पर खेली जा रही है। यह भू-राजनीति और सामाजिक-सियासी सत्ताधारी का खेल है। नतीजतन, ज़िंदगी और तहज़ीब की बर्बादी हुई है।

कंधार से गुरु नानक और भाई मरदाना ने ग़ज़नी का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम कंधार से ग़ज़नी जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: ग़ज़नी का मायना रत्न है। ग़ज़नी शहर मध्य अफ़ग़ानिस्तान में पुराने सौदागरी मार्गों पर स्थित है, जिसके परिणामस्वरूप यहां नस्ली विविधता वाली आबादी है। कंधार से काबुल के सफ़र के दौरान गुरु नानक ग़ज़नी से गुज़रे थे।

कंधार और काबुल को जोड़ने वाली ऐतिहासिक सड़क ग़ज़नी से होकर गुज़रती है। पुराने 'जन्मसाखी' साहित्य में ग़ज़नी से जुड़ा कोई वाक्या दर्ज़ नहीं है। कई विद्वानों और इतिहासकारों का मत है कि गुरु नानक को काबुल पहुंचने के लिये इस शहर से गुज़रना पड़ा था।

हम भाई नंद लाल गोआ की याद में बने गुरुद्वारे में जा रहे हैं जो शहर के बीच में है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के फ़लसफ़े का असर ग़ज़नी के स्थानीय वासियों ने कबूल किया। इस समय ग़ज़नी में चार गुरुद्वारे हैं। हम भाई नंद लाल गोआ की याद में बने गुरुद्वारे में खड़े हैं जिन्होंने गुरु गोबिंद सिंह के साथ समय बिताया था।

पहले ग़ज़नी में हिंदू और सिख मज़हबों के 'नानकपंथियों' की बड़ी आबादी हुआ करती थी, जो सियासी असुरक्षा के कारण अफ़ग़ानिस्तान से चले गये हैं। बिरादरी ने अपनी संगत के लिये चार गुरुद्वारों का निर्माण किया था। मौजूदा दौर में केवल नंद लाल गोआ वाला गुरुद्वारा अल्पसंखिया बिरादरी के लिये खुलता है।

इन सभी जगहों के बंद होने के बावजूद मुहाजिर अफ़ग़ानी सिख संगत की मदद से सेवा-संभाल होती है।

ग़ज़नी से हम गुरु नानक के पदचिन्हों से थोड़ा घुमाव लेकर एक सुदूर इलाके में जा रहे हैं जहां गुरु नानक के अनुयायी रहते थे लेकिन अब अपनी पुश्तैनी ज़मीन छोड़ कर जा चुके हैं।

हम उत्तर की ओर अफ़ग़ान-पाकिस्तान सीमा के साथ-साथ थोड़ी दूरी पर खोस्त नाम के कस्बे में जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: खोस्त में हम प्रेम नगर नामक रिहायशी इलाके में जा रहे हैं जहां गुरु नानक के हिंदू और सिख अनुयायियों की 'नानकपंथी' बिरादरी रहती थी।

खोस्त में गुरुद्वारा नानकपंथी बिरादरी द्वारा बनाया गया था। यह अफ़ग़ानिस्तान में सियासी उथल-पुथल से तबाह हो गया है। खोस्त में रहने वाले चार-पांच हिंदू-सिख परिवार इस तबाह हुये गुरूद्वारे की चारदीवारी के अंदर एक कमरे की, इबादत के सांझे स्थान के तौर पर सेवा-संभाल करते हैं। यहां गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है, साथ ही हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं और दीवार पर 'ओम हर श्री नाथ' की नक्काशी है।

हमने अपने सफ़र के दौरान अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में बहुत सारे साझे मज़हबी स्थान देखे हैं। यह सिंधु पट्टी के मज़हबों की साझी बुनतर वाली सोच को प्रकट करते हैं जहां गुरु नानक का फ़लसफ़ा धुरी बना है। यह दस्तूर पिछली एक सदी में धीरे-धीरे नष्ट हुआ है।

प्रेम नगर निवासी खालिदा बेग़म उर्फ़ पदमे अफ़ग़ानी मुस्लिम बुज़ुर्ग हैं जो एक लौह-शख़्श हैं। यह गुरुद्वारे की रक्षा करती हैं ताकि कोई इस पर कब्ज़ा ना कर ले।

खालिदा बेग़म: मेरा नाम पदमे है। मेरे पिता का नाम शेरज़ादा है। मैं उनकी बेटी हूं। मेरा गांव याकूबे है और अब मैं इस हिंदू गांव (प्रेम नगर) में रहती हूं। गुरु नानक ने मंगाल के पहाड़ों में से काबुल और पेशावर का सफ़र किया। वह चाहते थे कि लोग इत्तफ़ाक़ से रहें। उनका संदेश बदइत्तफ़ाक़ी पैदा करने वाला नहीं था। केवल एकता में ताकत है। बस यही उनकी इच्छा थी। दुर्भाग्य से अब हर कोई इधर-उधर बिखर गया है।

खालिदा बेग़म का कहना था कि हम उनके ख़ास मेहमान हैं, उनके महबूब गुरु नानक के पैरोकार।

खालिदा बेग़म की ख़ूबसूरत शख़्सियत ज़नाना नरमी और मरदाना दृढ़ता का सुमेल थी। मैं सोच रहा हूं कि कैसे लिंग पर आधारित पहचान, पूर्वाग्रह, पितृ सत्तात्मक मूल्यों और औरतों के ख़िलाफ़ ज़ुल्म ने समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक तवाज़न को बिगाड़ कर रख दिया है। सामाजिक नियमों द्वारा तय की गई भूमिकाओं से बाहर निकल कर जब मर्द अपने ज़नाना पहलुओं का अहसास करते हैं और औरतें को मर्दाना पहलुओं का अहसास होता है, तो मनुष्य के रूप में उनकी क्षमता उभर कर सामने आती है।

आपे पुरख आपे ही नारी ॥
आपे पासा आपे सारी ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

तुम आप ही पुरुष हो, आप ही नारी हो।
तुम आप ही पासा हो, और आप ही सारी हो।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि सृजन के नियम के अनुसार हम ज़नाना और मर्दाना ऊर्जा का मिश्रण हैं।

खोस्त से थोड़ा घुमाव लेकर हम गरदेज़ जा रहे हैं जो पाकतिया सूबे की राजधानी थी।

ओ इलाही संगी, मैं आशा करता हूं कि कहीं मैं तेरी मुहब्बत में पागल ना हो जाऊं।
ओ इलाही संगी, मैं तुमसे इकरार करता हूं कि मैं वापस लौटने नहीं आया हूं।

पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के सुलेमान पहाड़ों में अल्पाइन वादी में बसे इस इलाके में हिन्दू और बौद्ध धर्म की शानदार तवारीख़ है और अब यह इस्लामी है।

'भाई मणि सिंह जन्मसाखी' में दर्ज है कि ईरान के मशद की इमाम रज़ा दरगाह में गुरु नानक और भाई मरदाना ने पीर अब्दुल रहमान के साथ गोष्ट किया था जो गरदेज़ शहर से ज़ियारत के लिये गये थे।

ओ इलाही संगी, मेरा दोस्त हिंदू है, और मैं मुसलमान हूं।
ओ इलाही संगी, उसकी दोस्ती की मुहब्बत में मैं 'धर्मशाला' का झाडूबरदार हूं जहां वह इबादत करता है।

अमरदीप सिंह: हम उस जगह पर खड़े हैं जहां गरदेज़ का गुरुद्वारा हुआ करता था। यह गुरुद्वारा अफ़ग़ानिस्तान की सियासी उथल-पुथल में नष्ट हो गया। गरदेज़ की 'नानकपंथी' बिरादरी अब इस शहर से बिखर गई है।

इकरम-उद-दीन: मेरा नाम इकरम-उद-दीन है। मैं पाकतिया सूबे के गरदेज़ के बाज़ार-ए-ख़ुहना में रहता हूं। इस समय जैसे आप देख रहे हैं मैं उस ज़मीन पर खड़ा हूं जहां कभी धर्मशाला (गुरुद्वारा) था। तीस-पैंतीस

साल पहले जब मैं जवान था, तब यह गुरुद्वारा कायम था। हम गुरुद्वारे में जाते थे और अपने सिख और हिंदू दोस्तों के घर जाते थे। जब हम बच्चे थे तो हमारे उनकी बिरादरी के साथ अच्छे संबंध थे। हम उनके मज़हबी समागमों में शामिल होकर ख़ुश होते थे। दुर्भाग्य से यह गुरुद्वारा तबाह हो गया है और बिरादरी यहां से चली गई है। मैं चाहता हूं कि यह गुरुद्वारा दोबारा बनाया जाये। मुझे बहुत ख़ुशी होगी।

इकरम-उद-दीन हमें उस स्थान पर ले गये जिसे स्थानीय लोग गुरु नानक के साथ जोड़ते हैं।

अमरदीप सिंह: गरदेज़ के गुरुद्वारे के पास यह पानी का झरना है जिस को 'चश्मा मेराब' कहते हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि गुरु नानक इस स्थान पर आये थे।

हालाँकि, 'जन्मसाखी' ग्रंथों में गरदेज़ में गुरु नानक के किसी भी विवरण का उल्लेख नहीं है।

दो अलग-अलग नस्लों के जोड़ीदार पेड़ लगाने की तरकीब सदियों पुरानी है। दो नस्लों के पेड़ एक-दूसरे के करीब लगाने से उन्हें बढ़ने में मदद मिलती है।

मनुष्य भी भिन्न प्रकार की संगत में विकसित होता है। इकरम-उद-दीन की अपने सिख और हिंदू भाईचारे के लिये तड़प इस विचार की पुष्टि करती है। सामाजिक विभाजन हमारी नई पीढ़ी को अनेकता में ऐकता के आनंद से वंचित कर रहे हैं।

हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥
तूँ वसहि मन माहि सहजे रस रसै ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

मैं गौरवशाली गुणों को संजोकर जीता हूं, जिन का मेरे धुर अंदर वास है।
जब वह मेरे मन में बस जाते हैं सहज ही मैं उनके रस में रच जाता हूं।
(राग सूही, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि जब मन वहदत में लीन हो जाता है, तो वह ख़ुशी में आनंदित हो जाता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने ग़ज़नी से काबुल का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपने सफ़र को आगे बढ़ाते हुये हम ग़ज़नी से काबुल जा रहे हैं।

इसक मुहबत नानका लेखा करते पास ॥
हुकम रजाई साखती दरगह सच कबूल ॥
(गुरु नानक)

नानक कहते हैं कि इश्क-मुहब्बत का लेखा कर्ता के पास है।
उसके हुकम की मर्ज़ी में सृजना हुई है और उसकी दरगाह में सच ही कबूल होता है।
उसके हुकम की मर्ज़ी में सृजना हुई है और सच उसकी दरगाह में कबूल होता है।
(गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: काबुल अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी है जो वादी में बसा कटोरे जैसा घोसला है। विभिन्न दौर में काबुल विभिन्न मज़हबों और संस्कृतियों का घर रहा है जिसमें बौद्ध, हिंदू, पारसी और यहूदी शामिल हैं। अब काबुल बुनियादी तौर पर इस्लामी शहर है।

ऐतिहासिक रूप से काबुल वैदिक सभ्यता का केंद्र रहा है। गुरु नानक और भाई मरदाना की यात्रा के दौरान अफ़ग़ानिस्तान बाबर के कब्ज़े में आ गया था जो मुगल सल्तनत का संस्थापक था।

काबुल में आसा माई पर्वत में प्राचीन मंदिर है जो हिंदू देवी 'आसा माई' को समर्पित है।

'आसा' का मायना है, उम्मीद और 'माई' का मायना है, मां। 'आसा माई' मंदिर में सदियों से आशा की देवी की उपासना होती थी और संगत इकट्ठी होती थी; शायद यही कारण है कि गुरु नानक रूहानियत के जिज्ञासुओं के साथ गोष्ठी करने पहुंचे थे।

भाई मणि सिंह जन्मसाखी के अनुसार, यह ज़िक्र आता है कि 'आसा माई' पर्वत को जाते हुये गुरु नानक को कुछ साधु मिले। वे गुरु नानक का लिबास देखकर उनके मज़हबी झुकाव की पहचान नहीं कर सके। हिंदू साधुओं ने गुरु नानक को इस्लामिक इलाके में हिंदू स्थान की ज़ियारत करने के ख़िलाफ़ सचेत किया। मुसलमान फ़कीरों ने उनको ग़ैर-इस्लामी स्थान पर जाने के कारण काफ़िर करार दिया। इसके जवाब में गुरु नानक ने गाया,

बाबा अलह अगम अपार ॥
पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगार ॥
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवड नाउ ॥
जिथै वसै मेरा पातिसाह सो केवड है थाउ ॥
अंबड़ कोइ न सकई हउ किस नो पुछण जाउ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

हे बाबा, हाज़रा-हज़ूर तो अगम अनंत है।
वह नाम पवित्र है और वह स्थान पवित्र है जहां हाज़रा-हज़ूर की सच्चाई कायम है।
उस स्थान और नाम को कोई नहीं जानता। सभी नामों में सबसे बड़ा किसका नाम है?
जहां मेरा, हाज़रा-हज़ूर पातशाह रहता है, वह महान स्थान कहां है?
वहां कोई नहीं पहुंच सकता। मैं किसके पास जा कर पूछूं?
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने अपने सबद में 'अल्लाह' शब्द का प्रयोग किया जिसका मायना अरबी में हाज़रा-हज़ूर सृजनहार है। उन्होंने कहा कि हम मनुष्य सृष्टिकर्ता को अलग-अलग नामों से पुकारते हैं, उन्हें विभिन्न मज़हबों से जोड़ते हैं और अलग-अलग जगहों पर उसकी अकीदत करते हैं लेकिन वह हाज़रा-हज़ूर एक ही है।

कुछ 'जन्मसाखी' कलाकृतों में गुरु नानक और भाई मरदाना को काबुल में मान चंद नामक स्थानीय मेहमान निवाज़ के साथ चित्रित किया गया है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के काबुल आने के बाद बहुत सारे अफ़गान मूल के लोगों ने उनके फ़लसफ़े को मानना शुरू कर दिया जो 'धर्मशालाओं', 'उदासीयों', 'नानकपंथियों' और 'ख़ालसा' सिखों के माध्यम से फैलता गया।

अंदाज़ा यह है कि सन उन्नीस सौ बानवे में अफ़ग़ान गृहयुद्ध की शुरुआत के समय 'नानकपंथी' संगत की जनसंख्या तकरीबन ढाई लाख थी, जिसमें हिंदू और सिख शामिल थे। इस समय यह आबादी एक हज़ार से भी कम है। काबुल से पलायन करने से पहले इस बिरादरी की ख़ुशहाली का अंदाज़ा शहर के गुरुद्वारों की खाली इमारतों से लगता है।

हम शोर बाज़ार में गुरुद्वारा बाबा श्री चंद जा रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि यह गुरु नानक की काबुल यात्रा की याद में बनाया गया पहला स्थान है।

यह बाबा अलमस्त द्वारा बनाया गया था जो गुरु नानक के फ़लसफ़े का प्रचार करने वाले 'उदासीन' थे। काहन सिंह नाभा के 'महान कोष' के अनुसार बाबा अलमस्त गौड़ कश्मीरी परिवार में पंद्रह सौ तिरेपन ईस्वी में जन्मे थे और सोलह सौ तिरतालिस ईस्वी में उनकी मृत्यु हुई।

अमरदीप सिंह: काबुल शहर के बीच में शोर बाज़ार में यह स्थान 'उदासीन' सम्प्रदाय के पैरोकारों ने बनाया है। इस स्थान पर गुरु नानक, बाबा श्री चंद और हिंदू देवी-देवता के चित्र विराजमान हैं। इस स्थान की सेवा-संभाल काबुल में रह रहे गिनती के सिख और 'नानकपंथी' करते हैं।

ऐसा माना जाता है कि बाबा श्री चंद भी काबुल आये थे और उन्होंने गुरु नानक के संदेश का प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हम अब काबुल शहर के पाईं चौंक जा रहे हैं।

Site of erstwhile Gurdwara
Paen Chowk, Kabul, Afghanistan
पुराने गुरुद्वारे की जगह
पाईं चौंक, काबुल, अफ़ग़ानिस्तान

अमरदीप सिंह: पाईं चौंक की इस कारोबारी इमारत वाली जगह पर गुरु नानक के काबुल आने की याद में बने सब से पहले वाले गुरुद्वारों में एक होता था। इस इलाके के विकास के लिये वह गुरुद्वारा और उससे लगती मस्जिद को सरकार ने ख़रीद लिया था।

हम अब गुरुद्वारा करते परवान जा रहे हैं जो मौजूदा दौर में काबुल की सिख और हिंदू 'नानकपंथी' संगत का मुख्य मिलन स्थल है।

(धार्मिक सेवा)

स्थानीय लोग ज़िक्र करते हैं कि अफ़ग़ानिस्तान में सन उन्नीस सौ बानवे में सियासी उथल-पुथल से पहले गुरु नानक के फ़लसफ़े को मानने वाले अफ़ग़ानी मुसलमान गुरुद्वारों में आते थे।

बहुत प्रयास के बाद उस्ताद लाली से संपर्क हो पाया। वह उस्ताद रहीम बख़्श के वंश से हैं जो गुरु ग्रंथ साहिब के शबद बहुत श्रद्धा से गाते थे।

इसक मुहबत नानका लेखा करते पास ॥
हुकम रजाई साखती दरगह सच कबूल ॥
साहिब लेखा मंगसी दुनीआ देख न भूल ॥
दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिल रास ॥
(गुरु नानक)

नानक ने कहा कि कर्ता के पास इश्क-मुहब्बत का लेखा है।
यह सारी सृजना सृजनहार के हुक्म से हुई है। उसकी दरगाह में सच कबूल होता है।
चेतना ने तेरे कर्मों का लेखा मांगना है। दुनियादारी के तजुर्बे में भटक मत जाना।
जो अपने दिल पर दरबान बन पहरा देते हैं, उनके दिल में दरवेशपन बसता है।
(गुरु नानक)

उस्ताद लाली: मैं काबुल में रहता हूं और एक हिंदू-सिख इलाके में पला-बढ़ा हूं। मुझे हिंदू-सिख बिरादरी की रूहानी मौसिकी बहुत पसंद थी। मैं बिरादरी के मंदिरों और गुरुद्वारों में संगीत सिखाता था। मैं बाबा नानक साहिब का सबद सुनाता हूं जो मुझे याद है।

कलि परवाणु कतेब कुराण ॥
पोथी पंडित रहे पुराण ॥
नानक नाउ भइआ रहमाण ॥
करि करता तू एको जाण ॥
(गुरु नानक)

सभ्याचारों में असहमति है। कोई कतेब में और कोई कुरान में आस्था रखते हैं।
कोई पुरान को पाक मानते हैं।

नानक ने कहा कि जब मन में रहमदिली का वास होता है
तब सभी मज़हब एक ही सृजनहार को मानते हैं।
(गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने काबुल से जलालाबाद का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम काबुल से जलालाबाद जा रहे हैं।

जलालाबाद, हिंदू कुश पर्वत के दक्षिण की ओर पठार में काबुल और कुनेर नदियों के संगम पर स्थित है। यह पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में नानगाहार सूबे की राजधानी है। यह ख़ैबर दर्रे के माध्यम से राज मार्ग द्वारा तोरख़म सीमा से पाकिस्तान से जुड़ा हुआ है। यह सामाजिक और सौदागरी की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। नामवर बौद्ध भिक्षु ज़ुआन ज़ंग ने छः सौ तीस ईस्वी में इस शहर का ज़िक्र अदिनापुर के नाम से किया है, जो ग्रीको-बौद्ध सभ्यता का केंद्र था।

जलालाबाद में हम गुरु नानक दरबार गुरुद्वारा जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: जलालाबाद पहुंचने के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना ने लंडा नदी के किनारे क़ियाम किया जिसका मौजूदा नाम काबुल नदी है। अब इस नदी का प्रवाह बदल गया है। गुरु नानक की जलालाबाद आने की याद में गुरु नानक दरबार बनाया गया है।

जलालाबाद की सिख संगत के साथ हम पास के गांव सुल्तानपुर पहुँचे जहां गुरु नानक की याद में एक स्थान बनाया गया है।

सुल्तानपुर के पास हम चारबाग गांव में पीर रतन नाथ की दरगाह पर रुके।

पीर रतन नाथ का समय गुरु नानक से पहले का है। नेपाल के वासी पीर रतन नाथ दसवीं सदी के रूहानी रहबर गुरु गोरखनाथ के शिष्य थे। हिंदू उन्हें रतन नाथ कहते हैं और मुसलमान उन्हें हाजी रतन कह कर पुकारते हैं। दोनों मज़हबों में इनकी मान्यता है। दोनों बिरादरियों ने मिलकर अफ़ग़ानिस्तान में उनकी अकीदत में 'नाथ जोगियों' का डेरा बनाया है।

अपनी उदासियों के दौरान गुरु नानक ने 'गोरखपंथी नाथ जोगियों' के साथ विभिन्न इलाकों में गोष्ठी की। दिलचस्प है कि ऐसी कई जगहों पर गुरु नानक की याद में बने स्थान 'नाथ' स्थानों के पास बने हैं।

अमरदीप सिंह: जलालाबाद के बाहर सुल्तानपुर गांव सुर्ख़ रोड पर है। स्थानीय लोगों का मानना है कि गुरु नानक ने इस शुष्क और सूखे इलाके में पानी का चश्मा खोला था। स्थानीय लोग इसे 'चश्मा साहिब' कहते हैं।

पुरानी जन्मसाखियों में इस चश्मे का कोई ज़िक्र नहीं है।

पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही परंपरा में कई घातक इलाकों में चश्मे खोलने की कहानियां अक्सर गुरु नानक से जोड़ी गई हैं। मेरी विनम्र राय में, यह शुष्क मन की प्यास बुझाने के लिये रूहानी विवेक के प्रवाह की रूपक के तौर पर नुमाइंदगी है।

समाज तो विकसित हो गया है लेकिन अभी भी कई मायनों में मन का सूखापन कायम है।

अब भी शुष्क मन की मार महिला पर भेदभाव के रूप में पड़ती है। गुरु नानक ने सोलहवीं शताब्दी के दौरान इस सामाजिक बुराई के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की और चेतना का प्रसार किया।

भंड जंमीऐ भंड निंमीऐ भंड मंगण वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राह ॥
भंड मुआ भंड भालीऐ भंडि होवै बंधान ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जित जंमहि राजान ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

औरत ने मर्द को जन्म दिया है। औरत ने मर्द को पाला है। मर्द औरत के साथ शादी करता है।
वह मर्द की साथी बन जाती है। औरत से अगली पीढ़ियां जन्म लेती हैं।
जब औरत मरती है तो मर्द दूसरी औरत ढूंढता है। वह औरत से बंधा है।
फिर वह मंदी कैसे हुई जिसने गुणी जनों को जन्म दिया है?
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि औरतें आने वाली पीढ़ियों को जन्म देती हैं, नेक इंसान पैदा करती हैं, समाज के हर पहलू में योगदान देती हैं लेकिन उनके साथ लगातार भेदभाव किया जाता है। सामाजिक मुद्दों पर गुरु नानक की सोच अपने दौर से बहुत आगे थी। उन्होंने लैंगिक असमानता की कड़ी निंदा की।

जलालाबाद से गुरु नानक और भाई मरदाना ने कुर्रम इलाके के रास्ते सफ़र किया। अब डूरंड रेखा इस इलाके को अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में विभाजित करती है।

पंद्रहवीं शताब्दी में काबुल से पेशावर का रास्ता कुर्रम दर्रे से होकर जाता था।

हम अफ़ग़ानिस्तान के कुर्रम इलाके में चमकनी के गांव, बाबू खेल जा रहे हैं जहां कुछ साल पहले तक गुरु नानक की नामलेवा संगत बड़ी संख्या में रहती थी।

अमरदीप सिंह: हम बाबू खेल में हैं, जो अफ़ग़ानिस्तान में पाकिस्तान की सरहद से थोड़ी दूरी पर है।

भाई मरदाना की फानी संसार से विदाई के दो वृत्तांत हैं। बाद में लिखी गई 'बाला जन्मसाखी' के मुताबिक भाई मरदाना ने आख़िरी सांस कुर्रम इलाके में ली। 'बाला जन्मसाखी' के कुछ खंडों में दर्ज कलाकृत दिखाती हैं कि भाई मरदाना के शरीर को चिता पर रखा गया। बाकी कलाकृतों में कब्र दिखाई गई है जिस से उनको दफ़न किये जाने का इशारा मिलता है। हालांकि पुरानी 'जन्मसाखीयों' में दर्ज है कि उन्होंने अंतिम सांस करतारपुर में ली थी।

डॉ. कृपाल सिंह की पुस्तक "जन्म साखी परंपरा" मे दर्ज है की भाई मरदाना ने गुरु नानक के साथ करतारपुर तक सफ़र किया। हम इस बिरतांत के अनुसार आगे बढ़ रहे हैं।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा थड़ा साहिब बाबू खेल में 'नानकपंथी' बिरादरी ने गुरु नानक के इस इलाके में आने की याद में बनाया था। यह गुरु नानक के अफ़ग़ानिस्तान में सफ़र पर आख़िरी गुरुद्वारा है।

कुर्रम इलाके में भाई मरदाना की फानी संसार से विदाई की कोई निशानी या स्थान नहीं है।

अफ़ग़ानिस्तान की समूची बिरादरी पुराने दौर की यादों को ताज़ा करने के लिये साल में एक बार गुरुद्वारा थड़ा साहिब आती है।

गुरु नानक ने ज़िक्र किया कि ज़िंदगी और मौत का धागा एक सांस से बंधा हुआ है। मनुष्य अनजान है कि कौन कौन सी सांस अंतिम होगी। इसलिये उसे प्रत्येक सांस का सर्वोत्तम उपयोग करने का प्रयास करना चाहिये।

हम आदमी हाँ इक दमी मुहलत मुहत न जाणा ॥
नानक बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥
अंधे जीवना वीचार देख केते के दिना ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

हम तो दम की मोहलत वाले इंसान हैं। हम अपने जाने का मुकर्रर समय नहीं जानते।
नानक ने कहा कुदरत की इच्छा पर छोड़ दो, हमारी रूह और दम उसी की अमानत है।
अवलोकन के बिना ज़िंदगी ना गुज़ारो विचार करो। इस दम ने कितने दिन चलना है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

कुर्रम इलाके से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पाराचिनार का सफ़र किया।

हम हवाई सफ़र करते हुये अफ़ग़ानिस्तान से पाकिस्तान जा रहे हैं और गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र कुर्रम इलाके के पाराचिनार से आगे बढ़ायेंगे।

पाराचिनार वादी पाकिस्तान में अफ़ग़ानिस्तान की सरहद के पास है। पाराचिनार का नाम 'पारा' से लिया गया है जो इस जगह की जनजातियों में एक है और 'चिनार' वह पेड़ है जो इस वादी में बहुत होता है।

इस इलाके में 'नानकपंथी' सिखों और हिंदुओं की आबादी की गिनती उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के बाद बहुत कम हो गई है। बाद में सरहदी इलाके की सियासी उथल-पुथल ने बिरादरी को महफ़ूज़ जगहों पर जाने के लिये मजबूर कर दिया। नतीजन गुरु नानक के इस इलाके में आने की याद में बने कई स्थान वीरान हो गये। मौजूदा दौर में साल में कुछ मौकों पर, ख़ैबर पख़्तूनख़्वा इलाके से गुरु नानक के श्रद्धालु पाराचिनार में मज़हबी सेवा करने आते हैं।

पाराचिनार में हम सबसे पहले माली खेल नामक गांव जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: अफ़ग़ानिस्तान से गुरु नानक और भाई मरदाना ने कुर्रम दर्रे के रास्ते से पेशावर का सफ़र किया। माली खेल का यह गुरुद्वारा उस स्थान पर बना है जहां उन्होंने पाराचिनार में पहला क़ियाम किया था।

अब हम पाराचिनार में मलाना जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: पाराचिनार की वादी में माली खेल से गुरु नानक और भाई मरदाना मलाना पहुंचे। उनके यहां आने की याद में गुरुद्वारा टल्ला साहिब बना है। वादी में यह गुरुद्वारा एक पहाड़ी के शिख़र पर बना है जिसके तीन तरफ अफ़ग़ानिस्तान की सरहद लगती है।

पाराचिनार से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पेशावर जाने के लिये कोहाट शहर के पास इब्राहिमज़ई के रास्ते सफ़र किया।

पाराचिनार के मलाना से हम इब्राहिमज़ई में रुके हैं जहां गुरु नानक की इस इलाके में आने की याद में स्थान बना है।

अब गुरु नानक के श्रद्धालु इस इलाके में नहीं रहते परन्तु पिछले सालों में पेशावर की सिख संगत ने गुरुद्वारे की नये सिरे से सेवा संभाल की है और अब इस स्थान पर सालाना जोड़-मेला होता है।

इब्राहिमज़ई से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पेशावर का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम इब्राहिमज़ई से पेशावर वादी जा रहे हैं।

पेशावर पाकिस्तान के सूबा ख़ैबर पख्तूनख्वा की राजधानी है। इसकी अधिकांश आबादी पख्तून मूल की है। गुरु नानक के समय में इस शहर का नाम पाराशावर था। संस्कृत मूल के इस लफ़्ज़ का मायने मर्दों का शहर है। बादशाह अकबर की हकूमत में इसका नाम बदलकर पेशावर कर दिया गया। इतिहास के एक दौर में यह शहर विविध और समृद्ध सभ्यताओं का प्रवेश द्वार रहा है। इस शहर में प्राचीन विद्वान पाणिनि ने अपनी पुस्तक 'अष्टाध्याय' लिखी, जो आधुनिक बोलियों के भाषा-विज्ञान के संरचनात्मक अध्ययन का आधार है।

हुमायूं अखुण्ड: जब बाबर यहां आया था। उसी समय बाबा गुरु नानक जी इस इलाके में सफ़र कर रहे थे और उनका रूहानी सफ़र था, वह हक की तलाश में घूम रहे थे। उस ज़माने में पेशावर विभिन्न मज़हबों का

गढ़ समझा जाता था। उस ज़माने में इधर मुसलमान थे लेकिन इतनी तादाद में नहीं कि इसे शुद्ध मुसलमानों का शहर कहा जा सके।

हम पेशावर के अंदरून शहर में गोरख़ हटरी के प्राचीन शिव मंदिर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गोरख़ हटरी पेशावर के मध्य में एक महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल है जिसमें इतिहास की कई परतें हैं। कभी यह एक महत्वपूर्ण बौद्ध केंद्र था। माना जाता है कि गौतम बुद्ध ने यहां सौ फुट के पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान किया था।

बादशाह बाबर की आत्मकथा 'बाबरनामा' में गोरख़ हटरी की चिल्लों के माध्यम से पेशकारी हुई है। बाबर ने सोलहवीं सदी के शुरू में इस शहर पर हमला किया था।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के दौर में पेशावर में गोरख़ हटरी, 'गोरख़ पंथी जोगियों' की अकीदत का केंद्र था और इस इलाके में उनका काफी प्रभाव था। 'गोरख़ पंथी जोगी' गुरु गोरख़ नाथ के अनुयायी थे, जिनका प्रभाव नेपाल, इंडिया, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान तक था। पेशावर में गोरख़ हटरी केंद्र उत्तर-पश्चिम सीमा सूबे में एक प्रमुख गढ़ था। गुरु नानक और भाई मरदाना भी इस स्थान पर आये थे।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना गोरख़ हटरी पहुंचे तो 'भंडारे' का वितरण किया जा रहा था। जब डेरे वालों ने लंगर खा लिया तो जोगियों ने गुरु नानक से पूछा कि क्या वह गृहस्थी हैं या जोगी हैं। जब गुरु नाक ने गृहस्थी होने का उत्तर दिया तो एक जोगी ने टिप्पणी की कि जो इंसान गृहस्थ के पारिवारिक उलझनों में फस जाता है वह रौशनख़याल की उचाई पर पहुंचने की क्षमता से वंचित हो जाता है। उनकी हालत नशे में धुत मनुष्य जैसी है जो मन एकाग्र नहीं कर सकता। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

जपस निरंजन रचस मना ॥
काहे बोलहि जोगी कपट घना ॥
काइआ कमली हंस इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥
प्रणवत नानक नागी दाझै फिर पाछै पछुताणीता ॥
(राग गौड़ी चैती, गुरु नानक)

निरंजन के गुणों का ध्यान करो और उसे मन में बसाओ।
हे जोगी, तू कपटी बोल क्यों बोलता है?
काया कमली और मन बचकाना है।
अहंकार और अहम् में ज़िंदगी व्यर्थ जाती है।
नानक ने कहा कि जब शरीर का अंतिम संस्कार किया जाता है तब रूह मातम करती है।
(राग गौड़ी चैती, गुरु नानक)

मन को वश में कर के सरलता का सदाचारी जीवन जीने से रूहानियत नसीब होती है, स्वयं को नकारने से नहीं होती। गुरु नानक ने फ़रमाया कि जोगी समाज से बेलाग तो हो सकता है लेकिन गर्व और अहंकार वाली ज़िंदगी में फंसा हो सकता है। दूसरी ओर गृहस्थी सामाजिक मामलों में शामिल होते हुये भी विनम्र हो सकता है और रूहानी ज़िंदगी जी सकता है।

गोरख़ हटरी में गुरु नानक के क़ियाम के दौरान किसी जोगी ने पूछा कि वह बाहरी भेष और सिद्धियों की क़द्र क्यों नहीं करते। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

सिध साधिक अर जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥
जे तिन मिला त कीरत आखा ता मनु सेव करे ॥
कागद लूण रहै घृत संगे पाणी कमल रहै ॥
ऐसे भगत मिलहि जन नानक तिन जम किआ करै ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

विविध सिध, साधक, जोगी, जंगम और पीर हैं।
अगर मैं ऐसे लोगों से मिला तो मैं कह सकता हूं कि मैंने अच्छे काम किये हैं और मेरे मन ने सेवा की है।
अगर काग़ज़ और नमक को घी लगा हो तो पानी इस को छू नहीं सकता जैसे कमल का फूल पानी से अछूता रहता है।
नानक ने कहा कि जो ऐसे लोगों से मिलते हैं, वह रूहानी पक्ष से मर नहीं सकते।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फरमाया कि अगर घी लगा हो तो नमक और काग़ज़ अलग रहते हैं। इसी प्रकार सोच-विचार में रूहानी आरज़ूमंद बाहरी लिबासों और सिद्धियों से निरलेप रहते हैं। वे नम्रता से अपनी बुद्धि और शारीरिक शक्ति दिखाने से बचते हैं क्योंकि प्यार ही ताकत का असल इज़हार है।

पेशावर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पूर्व की ओर कूच किया और एक बार फिर सैदपुर शहर का सफ़र किया जिसको अब ऐमनाबाद कहा जाता है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम पेशावर से ऐमनाबाद जा रहे हैं।

भाई लालो नाम के बढ़ई ने ऐमनाबाद की पहली यात्रा के दौरान गुरु नानक की मेहमाननवाज़ी की थी। उन्होंने फिर से गुरु नानक का स्वागत किया।

गुरु नानक की दूसरी उदासी के दौरान ऐमनाबाद शहर तबाही वाली हालत में था। मध्य एशिया के हमलावर बादशाह बाबर इंडिया में मुगल सल्तनत का संस्थापक था। उसने अफ़ग़ानिस्तान पर कब्ज़ा करने के बाद पंजाब पर हमला किया। इतिहास में दर्ज है कि उसने ऐमनाबाद शहर को लूटा और विरोध करने की हिम्मत करने वाले स्थानीय लोगों का बेरहमी से नरसंहार किया। उसने ना औरतों और बच्चों को बख्शा, ना ही हिंदुओं और मुसलमानों को छोड़ा। सभी को बेरहमी से कैद में रखा। बाबर अपने संस्मरण 'बाबर-नामा' में कहता है कि पास के शहर सियालकोट के लोगों को उसकी सेना द्वारा बख्शा गया क्योंकि उन्होंने बिना किसी विरोध के उसकी सेना के सामने हथियार फेंक दिये थे।

जहानदाद ख़ान ने हमें गुरुद्वारा चक्की साहिब का रास्ता दिखाया जो सन उन्नीस सौ सैंतालीस में वीरान हो गया था और सन उन्नीस सौ बानवे ईस्वी में फिर से बनाया गया।

जहानदाद ख़ान: हम चक्की साहिब गुरुद्वारे में हैं और यह वह जगह है जहां पंजाब पर हमले के दौरान मुगल बादशाह बाबर ने गुरु नानक को कैद किया था। बाद में इस स्थान पर गुरुद्वारा बनाया गया। हम अभी उसी जगह पर हैं। सिख जन्मसाखी परंपरा के अनुसार, भाई मरदाना और गुरु नानक भी बंदियों में शामिल थे जब बाबर की सेना ने ऐमनाबाद को तबाह कर दिया था। गुरु से कैद में अनाज गया था। गुरु नानक ने उस हमले के विनाश के बारे में चार सबद लिखे, जिसे 'बाबर बाणी' कहा जाता है। उन्होंने बहुत गहराई से लूट होने का व्याख्यान पेश किया जिसकी मार सभी मान्यताओं, जातियों और मज़हबों के लोगों को पड़ी थी। उन्होंने कहा,

पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दान वे लालो ॥
(गुरु नानक)

बाबर ने काबुल से पाप की बारात (फौज) लाकर धावा बोला है। हे प्यारे, वह जबरदस्ती दहेज (परिसम्पति) मांग रहा है।
(गुरु नानक)

'जन्मसाखी' कलाकृतों में मुगल बादशाह बाबर के हमले और उसकी जीत दर्शाई गई है। कुछ लोगों को परेशान और कुछ लोगों को खुश दिखाया गया है। समाज में दो अलग-अलग जज़्बात को देखकर गुरु नानक ने गाया,

आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥
दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

कर्ता स्वयं ही कर्म करता है और करवाता है। शिकायत किससे करें?
दुख और सुख कुदरत का नियम है। किसके आगे जा कर रोया जाये?
कायनाती हुकम अपनी रज़ा से चलता है। नानक ने कहा कि हर किसी को अपने लिखे को भोगना है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि दुख और सुख कुदरत के नियम हैं जो हाज़रा-हज़ूर कर्ता के हुक्म के अनुसार आते-जाते हैं।

ऐमनाबाद से गुरु नानक और भाई मरदाना ने तलवंडी का सफ़र किया जिसको अब ननकाना साहिब कहा जाता है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम ऐमनाबाद से ननकाना साहिब जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना तकरीबन चार साल का सफ़र करने के बाद तलवंडी लौट रहे थे।

गुरु नानक की तीसरी उदासी पश्चिम की ओर पंद्रह सौ बीस में शुरू हुई और अंदाज़न पंद्रह सौ चौबीस में ख़त्म हुई जब गुरु नानक की उम्र पचपन साल थी।

मैं अक्सर सोचता हूं कि गुरु नानक की उदासियों में कौन से पल महत्वपूर्ण रहे होंगे। पंजाबी में 'अमृत वेल' दो महत्वपूर्ण शब्दों के जोड़ से बना इज़हार है। अमृत का भाव हे वह सोमा जो इंसान को अमर कर देता है और वेला समय का उल्लेख करता है। गुरु नानक ने कहा कि जब सत्य, चिंतन और उच्च विचारों को आत्मसात करने का महत्वपूर्ण क्षण आता है, तब अमृत वेला होता है।

अंमृत वेला सच नाउ वडिआई वीचार ॥
(जप, गुरु नानक)

वह पल अमृत वेला बन जाता है जब सत्य और रचनात्मक सोच के बारे में विचार होता है।
(जप, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २२: लिहाज़-ए-इंसानियत (मानवता का सम्मान)

यह चर्चा संकेतक अफगानिस्तान और पाकिस्तान में गुरु नानक की यात्रा के ऐतिहासिक महत्व और दार्शनिक गहराई की खोज के लिए एक रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। विदेशी आक्रमणों की राजनीतिक उथल-पुथल, मध्य एशिया के धार्मिक परिदृश्य, और गुरु नानक से जुड़ी ऐतिहासिक स्थलों की जांच करके, हम उनके दृष्टिकोण की मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। दार्शनिक पूछताछ गुरु नानक के क्रांतिकारी दृष्टिकोण पर केंद्रित हैं, जो अनुष्ठानिक प्रथाओं की तुलना में नैतिक आचरण को प्राथमिकता देता है। वे 'पाँच चोरों', यानी मानव चेतना को ग्रसित करने वाले दोषों, और विविधता के महत्व जैसे विचारों को संबोधित करते हैं। यह खोज दर्शाती है कि गुरु नानक का रुहानी संदेश भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करता हुआ, आधुनिक सीमाओं से विभाजित क्षेत्रों में अनुयायियों के समुदायों को प्रोत्साहित करता रहा। यद्यपि राजनीतिक अस्थिरता ने अफगानिस्तान की कभी फलती-फूलती 'नानकपंथी' समुदायों को बड़े पैमाने पर तितर-बितर कर दिया है, लेकिन भौतिक स्थल और उनका दर्शन गुरु नानक की सार्वभौमिक मानवता की विरासत को संरक्षित करते हैं, और हमें प्रेरित करते हैं कि हम इस पर चिंतन करें कि उनका कालातीत ज्ञान आज के विभाजनों और संघर्षों को संबोधित करने में कैसे सहायता कर सकता है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक की तीसरी यात्रा के दौरान इस्लामी क्षेत्रों में सामाजिक गतिशीलताओं को आकार देने वाला ऐतिहासिक संदर्भ क्या था?**
   गुरु नानक की तीसरी पश्चिमी यात्रा लगभग १५२० से १५२४ ईस्वी के बीच हुई, जब वे लगभग ५५ वर्ष के थे। यह समय बाबर के उथल-पुथल भरे आक्रमणों और मुग़ल साम्राज्य के उदय के साथ मेल खाता है। विशेष रूप से, जब गुरु नानक कंधार में थे, तब यह क्षेत्र आज की ही तरह बाबर के आक्रमणों की उथल-पुथल से जूझ रहा था। इस राजनीतिक अशांति ने गुरु नानक के संवादों और उनके संदेशों के प्रभाव को उनकी यात्रा के दौरान किस प्रकार आकार दिया?

२. अफगानिस्तान के माध्यम से गुरु नानक की यात्रा ने सोलहवीं शताब्दी के दौरान क्षेत्र में विद्यमान सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को किस प्रकार दर्शाया?

यह एपिसोड अफगानिस्तान की समृद्ध ऐतिहासिक परंपराओं का अन्वेषण करता है, यह दर्शाते हुए कि काबुल एक समय वैदिक संस्कृति का केंद्र था। साथ ही, ग़ज़नी जैसे शहर अपनी प्राचीन व्यापार और मार्गों पर स्थित होने के कारण बहु-जातीय आबादी के लिए जाने जाते थे। इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि गुरु नानक ने विभिन्न रुहानी केंद्रों का दौरा किया, जिनमें हिन्दू मंदिर, इस्लामी स्थल और तपस्वी परंपराओं से जुड़ी जगहें शामिल थीं। यह यात्रा उस काल के मध्य एशिया के जटिल धार्मिक परिदृश्य को किस प्रकार उजागर करती है?

३. वर्तमान अफगानिस्तान और पाकिस्तान में गुरु नानक की उपस्थिति का क्या प्रमाण मिलता है?

यह एपिसोड गुरु नानक की यात्राओं की स्मृति में निर्मित कई स्थलों का वर्णन करता है, जिनमें कंधार, ग़ज़नी, काबुल, जलालाबाद, पराचिनार, इब्राहीमज़ई और पेशावर में गुरुद्वारे शामिल हैं। इसमें 'चश्मा साहिब' जैसे जलस्रोतों का भी उल्लेख है, जो जलालाबाद के पास स्थित हैं और जिनके बारे में स्थानीय लोगों का विश्वास है कि वे गुरु नानक द्वारा प्रकट किए गए थे। यह पाठ विभिन्न जनमसाखियों का हवाला देता है जो इन यात्राओं का वृत्तांत प्रस्तुत करती हैं, यद्यपि उनमें कुछ असंगतियाँ भी हैं। ये ऐतिहासिक चिह्न इन क्षेत्रों में गुरु नानक की उपस्थिति के प्रभाव के बारे में क्या दर्शाते हैं?

४. गुरु नानक और उनकी यात्रा के दौरान मिले विभिन्न रुहानी व्यक्तित्वों के बीच क्या संबंध था?

यह एपिसोड गुरु नानक की विभिन्न रुहानी व्यक्तित्वों से हुई मुलाकातों का वर्णन करता है, जैसे कंधार में बाबा वली कंधारी, और पेशावर के गोरख हटरी में शाह शराफ व गोरखपंथी जोगी (सन्यासी)। ये मुलाकातें गुरु नानक के संदेश के विकास और प्रसार को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

५. अफगानिस्तान में गुरु नानक के दर्शन का प्रभाव इतिहास के दौरान विशेष रूप से 'नानकपंथी' समुदाय के संबंध में किस प्रकार विकसित हुआ है?

एपिसोड बताता है कि १९९२ के अफ़गान गृहयुद्ध से पहले 'नानकपंथी' समुदाय, जिसमें सिख और हिन्दू शामिल थे जो गुरु नानक के दर्शन का पालन करते थे, की अनुमानित संख्या लगभग २,५०,००० थी। इसके विपरीत, आज अफगानिस्तान में एक हज़ार से भी कम लोग बचे हैं। इसमें डॉ. रघुनाथ को कंधार के अंतिम 'नानकपंथी' निवासी के रूप में प्रस्तुत किया गया है और पूरे क्षेत्र में परित्यक्त गुरुद्वारों पर चर्चा की गई है। इस महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय परिवर्तन में कौन-कौन से कारक योगदान देते हैं, और इस विरासत को संरक्षित करने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक ने लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों के मात्र पालन की तुलना में सही आचरण से जुड़ाव की गहराई को पहचानने के लिए कैसे प्रेरित किया?

एपिसोड में, गुरु नानक अपना सबद साझा करते हैं, जिसमें वे कहते हैं कि केवल ज्ञान को बोलना और सुनना, यदि उसमें चिंतन न हो, तो मन भौतिकवाद में फँसा रहता है। वे ज़ोर देते हैं कि दिव्यता की समझ की कृपा उन्हें प्राप्त होती है जो ज्ञान को आत्मसात करते हैं और एकत्व की अवधारणा को अपनाते हैं। वे आगे समझाते हैं कि मन को नियंत्रित करने के लिए किए गए अनुशासनात्मक प्रयास तब तक अप्रभावी रहते हैं जब तक कोई आंतरिक शैतानी विकारों, जिन्हें 'शैतान' कहा गया है, को नियंत्रित नहीं करता। ये अंतर्दृष्टियाँ इस विचार को चुनौती देती हैं कि केवल बाहरी धार्मिक अभ्यास रुहानी विकास के लिए पर्याप्त हैं।

२. गुरु नानक ने 'पाँच चोरों' के रूप में किन तत्वों की पहचान की, और वे उनके दर्शन में मानव पीड़ा से कैसे संबंधित हैं?

एपिसोड में गुरु नानक शक्ति, धन, सौंदर्य, प्रतिष्ठा और यौवन को पाँच चोरों के रूप में पहचानते हैं। वे कहते हैं कि इन चोरों ने संसार को लूटा है और किसी की भी इज़्ज़त नहीं छोड़ी है। वे यह भी बताते हैं कि ये चोर उनसे लूटे जाते हैं जो रुहानी ज्ञान के आगे समर्पण करते हैं, और वे उन्हें लूटते हैं जिनकी नीयत ईमानदार नहीं होती। यह अवधारणा गुरु नानक की मानव मनोविज्ञान और रुहानी मुक्ति की समझ को उजागर करती है।

३. गुरु नानक ने अपने समय की गहराई से जमी हुई लिंग असमानताओं को किस प्रकार चुनौती दी?

एपिसोड गुरु नानक की बुद्धिमत्ता को उजागर करता है, जहाँ वे ज़ोरदार ढंग से कहते हैं कि हर कोई स्त्री से जन्म लेता है। स्त्री ही गर्भधारण का स्रोत है, विवाह के लिए चाही जाती है, और मित्र भी हो सकती है। स्त्री से ही वंश आगे बढ़ता है। फिर स्त्री को हीन क्यों माना जाए? स्त्रियों से ही वे लोग आते हैं जो सद्गुण और योग्यता रखते हैं। यह सबद सामाजिक मुद्दों पर गुरु नानक के प्रगतिशील दृष्टिकोण को रेखांकित करता है और लिंग असमानता को दृढ़ता से खारिज करता है।

४. गृहस्थ जीवन और सन्यासी जीवन की बहस पर गुरु नानक का दृष्टिकोण क्या था?

एपिसोड में, जब गोरख हटरी में उनसे पूछा गया कि क्या वे स्वयं को गृहस्थ मानते हैं या सन्यासी, तो गुरु नानक ने स्वयं को गृहस्थ बताया। जब सन्यासियों ने तर्क दिया कि गृहस्थ, पारिवारिक जीवन में उलझकर उच्चतर आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि सन्यासी भले ही समाज से अलग हो जाए, फिर भी वह अहंकार में डूबा हो सकता है और आत्मकेंद्रित जीवन जी सकता है। इसके विपरीत, एक गृहस्थ सामाजिक कार्यों में भाग लेते हुए भी विनम्र रह सकता है और रुहानी मार्ग पर दृढ़ रह सकता है। यह दृष्टिकोण रुहानी उन्नति की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देता है।

५. गुरु नानक ने किस प्रकार सभी आस्थाओं के प्रति सम्मान पर आधारित एकत्व के दर्शन को बढ़ावा देकर विभिन्न धार्मिक पहचानों के बीच सेतु का कार्य किया?

एपिसोड में गुरु नानक का एक सबद उल्लेखित है, जो धार्मिक विचारों में कलह की उपस्थिति को उजागर करता है। इब्राहीमी परंपरा 'किताब' और 'कुरान' को पवित्र ग्रंथ मानती है, जबकि भारतीय परंपरा 'पुराणों' को आदरणीय ग्रंथ मानती है। काबुल में, गुरु नानक ने धार्मिक पहचान पर बहस कर रहे संतो को संबोधित किया और कहा कि मनुष्य सृष्टिकर्ता को विभिन्न नामों से पुकार सकता है, उसे विभिन्न धर्मों से जोड़ सकता है, या उसे अलग-अलग स्थलों पर सम्मान दे सकता है। फिर भी, विश्वासों की विविधता के बावजूद, यह स्वीकार करना आवश्यक है कि केवल एक ही शक्ति सर्वव्यापी है।

६. गुरु नानक की मानव विविधता पर दी गई समझ के आलोक में 'सहचर पौधरोपण' को क्या महत्वपूर्ण बनाता है?

एपिसोड में उल्लेख है कि 'सहचर पौधरोपण' एक प्राचीन तकनीक है, जिसमें दो अलग-अलग प्रजातियों के पौधे एक साथ लगाए जाते हैं ताकि दोनों का विकास हो सके। इसी प्रकार, मनुष्य भी विविध समुदायों में पनपते हैं। यह विचार अफ़गान मूल के इकराम-उद-दीन से जुड़ा है, जो अपने सिख और हिन्दू मित्रों की याद करते हैं। वे ज़ोर देते हैं कि सामाजिक ध्रुवीकरण आने वाली पीढ़ियों को उस आनंद से वंचित करता है जो एकता में विविधता से प्राप्त होता है। यह रूपक गुरु नानक की सामंजस्यपूर्ण और बहुलतावादी समाज की दृष्टि को दर्शाता है।